भगवान श्रीकृष्ण का अक्षय अनुग्रह

महाभारत की एक कथा पर आधारित

नीति परायण पाण्डव भाई, अपने भ्राता धर्मराज युधिष्ठिर के नेतृत्त्व में, हस्तिनापुर साम्राज्य के न्यायसंगत उत्तराधिकारी थे। परन्तु उनके ईष्यालु चचेरे भाई दुर्योधन के छल-कपट के कारण उन्हें बारह वर्षों के लिए देश से निर्वासित करके वनवास दे दिया गया।

बहुत सारे निष्ठावान ऋषि भी पाण्डवों के साथ वन में गए। धर्मराज युधिष्ठिर को यह समझ नहीं आ रहा था कि वे अपने परिवार व ऋषियों का भरण-पोषण करने के अपने दायित्व का निर्वाह कैसे करेंगे। धर्मराज युधिष्ठिर ने सूर्य देव से वरदान पाने के लिए प्रार्थना की। युधिष्ठिर की प्रार्थना सुनकर, सूर्य देव उनके सामने प्रकट हुए। उनका कवच स्वर्णिम प्रभा का था और उनके हाथ में एक अद्‌भुत प्याला था, जो स्वयं सूर्य के समान ही चमकदार और उज्ज्वल था, यह अक्षय पात्र था।

सूर्य देव ने कहा, "हे! ज्येष्ठ पाण्डु पुत्र, यह दिव्य पात्र ग्रहण करो। यह ईश्वर के अक्षय अनुग्रह का प्रतीक है। इस पात्र से तुम्हें और तुम्हारे भाइयों को प्रतिदिन भोजन प्राप्त होता रहेगा। तुम्हारी पत्नी, द्रौपदी, सभी ऋषियों को भोजन परोसने की सेवा करे। और सभी के भोजन कर लेने के पश्चात् अन्त में ही तुम्हारी पत्नी, द्रौपदी अपना भोजन ग्रहण करे, जैसी कि हमारी परम्परा है। मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि इस प्रकार भोजन करने से, तुम्हें कभी भी भूखा नहीं रहना पड़ेगा।"

सूर्य देव द्वारा दिए गए उपहार के लिए पाण्डव उनके प्रति कृतज्ञ थे और प्रतिदिन अक्षय पात्र से अपना भोजन ग्रहण कर के उनके आदेश का पालन करने लगे। पाण्डवों व सभी ऋषियों के भोजन ग्रहण कर लेने के पश्चात् ही द्रौपदी अपना भोजन करती थीं। इसके बाद वह पात्र दूसरे दिन सुबह तब तक खाली रहता था, जब तक कि जादुई रूप से उसमें दोबारा भोजन नहीं आ जाता था।

जब अक्षय पात्र की बात हस्तिनापुर पहुँची, दुष्ट दुर्योधन जल उठा। उसने पाण्डवों के विरुद्ध एक और चाल चली। वह कई सप्ताहों से मुनि दुर्वासा, जो एक तेजस्वी ऋषि थे, उनके प्रति सम्मान प्रकट कर रहा था। वह उनसे वरदान प्राप्त करने की आशा से, उनके लिए तथा उनके दस हज़ार शिष्यों के लिए भोजन का प्रबन्ध करता रहा था। मुनि दुर्वासा, अपने क्रोध के लिए विश्वभर में विख्यात थे। थोड़ा-सा

अनादर होने पर भी वे श्राप दे देते थे। उनके क्रोध से राजा और देवता, समान रूप से डरते थे। लेकिन दुर्योधन की सेवा से सन्तुष्ट होकर उन्होंने कहा, "मैं तुमसे प्रसन्न हूँ। तुम जो माँगोगे, तुम्हें वह प्रदान किया जाएगा।"

अपने दुश्मनों के विनाश की सम्भावना से उत्साहित, दुर्योधन इसी क्षण की प्रतीक्षा कर रहा था।

दुर्योधन ने नम्रतापूर्वक झुककर मुनि दुर्वासा से कहा, "हे महर्षि! हे योगीराज! मेरी इच्छा यह है : कृपा करके वन में पाण्डवों को दर्शन दें। वे मेरे प्रिय मित्र हैं और बड़े धर्मात्मा हैं। आपके दर्शनों से वे बहुत प्रसन्न होंगे। कृपया, द्रौपदी के भोजन कर लेने के पश्चात् आप वहाँ जाएँ जिससे वह अच्छी तरह आपकी सेवा कर सकें।" ऋषि सहमत हो गए और अगले ही दिन अपने दस हज़ार शिष्यों के साथ पाण्डवों की कुटिया की ओर निकल पड़े।

अगले दिन शाम को ऋषि को आते देख, धर्मराज युधिष्ठिर अपने भाइयों के साथ उनका स्वागत करने के लिए शीघ्रता से आगे बढ़े। इन महान ऋषियों का स्वागत करने की जल्दबाजी में युधिष्ठिर यह भूल गए कि द्रौपदी ने अभी-अभी ही अपना भोजन समाप्त किया था। उन्होंने हाथ जोड़कर दुर्वासा मुनि का स्वागत किया और कहा, "हे ऋषिवर! आप कृपया नदी में स्नान कर लें, फिर आपको और आपके शिष्यों को भोजन कराना हमारा सौभाग्य होगा।"

राजकुमारी द्रौपदी, अतिथियों का स्वागत करने हेतु कुटी से बाहर आई। जब उन्होंने धर्मराज युधिष्ठिर द्वारा दिए गए निमन्त्रण के बारे में सुना तो वे भय से काँप उठीं। अक्षय पात्र तो खाली हो चुका था! भूखे ऋषि और उनके शिष्यों को भोजन कराना असम्भव था। मुनि दुर्वासा निश्चय ही उनके समस्त परिवार को श्राप दे देंगे।

द्रौपदी दौड़कर अपनी कुटिया में गईं और घुटनें टेककर बड़ी व्याकुलता से पाण्डवों के गुरु, भगवान श्रीकृष्ण से प्रार्थना करने लगीं।

"हे श्रीकृष्ण,
आपकी शक्ति अपरम्पार है,
आप व्यथितों के कर्मठ नायक हैं,
समस्त विश्व और सृष्टि के पालनहार हैं,
आप महान से भी महानतम हैं, सभी के सर्वोत्कृष्ट आश्रय हैं!

हे देवों के देव, आपके शरणागत होने पर
सभी भयों से मुक्ति मिल जाती है।
आपने पहले भी मेरी अनेक बार मेरी रक्षा की है,
इस संकट से आप ही मेरी रक्षा कीजिए।"

द्रौपदी की प्रार्थना सुनकर भगवान श्रीकृष्ण, तत्काल ही उनके सामने प्रकट हो गए। वे समस्त दिव्य लोकों के समान तेजोमय थे तथा सत्य और धर्म के मूर्तरूप थे। उन्होंने स्थिर व स्नेहपूर्ण स्वर में द्रौपदी से कहा, "मैं बहुत भूखा हूँ! जल्दी करो! मेरे लिए कुछ खाने को लाओ!"

द्रौपदी विनय भरे स्वर में कहने लगीं, "किन्तु मेरे प्रभु, यहाँ तो कुछ भी भोजन शेष नहीं है! अक्षय पात्र खाली है, और दुर्वासा मुनि हम पर क्रोध करेंगे! कृपया मेरी सहायता कीजिए !"

सबके हृदयों में निवास करने वाले भगवान श्रीकृष्ण ने पुनः उन्हें आदेश दिया, "जल्दी करो, जल्दी करो! मेरे पेट में चूहे कूद रहे हैं! सूर्य देव का पात्र मेरे पास ले आओ! निश्चित रूप से उसमें कुछ बचा है!"

द्रौपदी ने मन में सोचा, "भगवान में सम्पूर्ण विश्वास रखना और उनकी आज्ञा का पालन करना मेरा धर्म है। वे तो अनदेखी को देखते हैं और असम्भव को भी सत्य बना देते हैं। मैं, स्वयं को उनकी आज्ञा के प्रति समर्पित करती हूँ।" उसने झुककर प्रणाम किया और अक्षय पात्र लाकर अपने श्रीगुरु श्रीकृष्ण को दे दिया। भगवान श्रीकृष्ण ने पात्र के किनारों पर अपनी उँगली घुमाई। फिर वे द्रौपदी की ओर देखकर मुस्कुराए और अपनी उँगली निकाली; उसमें चावल का एक दाना लगा हुआ था। उन्होंने स्वाद लेते हुए उस दाने को बड़े आनन्द से खा लिया। फिर उन्होंने कहा, "श्रीहरि, जो ब्रह्माण्ड की आत्मा हैं, इस भेंट से तृप्त हों।"

भीम, जो पाण्डवों में सबसे बलशाली थे, इस दिव्य लीला को देख रहे थे। भगवान श्रीकृष्ण उनकी ओर मुड़े और बोले, "शीघ्र जाओ और दुर्वासा मुनि तथा बाकी सभी लोगों को भोजन ग्रहण करने के लिए बुला लाओ!"

इसी बीच, नदी में स्नान कर रहे मुनि दुर्वासा और उनके शिष्यों की भोजन करने की इच्छा अकस्मात् ही समाप्त हो गई। एक शिष्य ने पूछा, "हे महर्षि, अब हम क्या करेंगे? हमारा पेट तो पूरा भरा हुआ लग रहा है। हम पूरी तरह तृप्त हैं। पाण्डवों के यहाँ भोजन करना तो असम्भव है।" ऋषि ने उत्तर दिया, "एक बार निमन्त्रण स्वीकार करने के बाद फिर अस्वीकार करके हम एक गम्भीर गलती कर देंगे।

युधिष्ठिर और उसके भाई धर्मात्मा हैं किन्तु वे योद्धा भी हैं। इस बुरे आचरण से वे क्रोधित हो जाएँगे। उनके वापस आने से पहले ही हमें यहाँ से चले जाना चाहिए!"

भगवान श्रीकृष्ण के निर्देशानुसार, भीम नदी पर गए और देखा कि दुर्वासा मुनि और उनके शिष्य शीघ्रतापूर्वक पाण्डवों की कुटिया से दूर भागे जा रहे थे। भीम ने यह बात युधिष्ठिर को बताई। युधिष्ठिर ने अपने छोटे भाई से पूछा कि यह सब कैसे सम्भव हुआ। तब भीम ने उन्हें भगवान श्रीकृष्ण की लीला के बारे में बताया। तत्काल ही पाण्डव, अपने श्रीगुरु श्रीकृष्ण के दर्शन करने व अपनी कृतज्ञता अभिव्यक्त करने अपनी कुटिया में गए।

धन्य हैं प्रभु! एक मनमोहक मुस्कान के साथ उन्होंने सबका स्वागत किया। द्रौपदी ने बताया कि कैसे भगवान श्रीकृष्ण वहाँ प्रकट हुए और उन्होंने किस प्रकार अक्षय पात्र में बचे हुए चावल के उस एक दाने का स्वाद लिया। कृतज्ञता के आँसुओं से पाण्डवों की आँखें भर गईं और उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण के समक्ष अपना सिर नवाया।

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा, "द्रौपदी की करुण प्रार्थना के कारण ही, मैं यहाँ उपस्थित हुआ हूँ। यद्यपि चावल के एक दाने की उसकी भेंट बहुत ही साधारण थी, परन्तु उसके विश्वास और भक्ति ने मुझे प्रसन्न कर दिया। मुझमें उसका विश्वास अटल था। जब कोई व्यक्ति प्रेम पूर्वक किए गए अपने कर्तव्य को ईश्वर को समर्पित करता है, तब उसके छोटे से छोटे सत्कर्म में भी कई लोगों का उत्थान करने की शक्ति होती है।

द्रौपदी ने, तुम पाण्डवों के समान ही अपने धर्म का निर्वाह किया है। सदैव याद रखना कि अक्षय पात्र के समान ही ईश्वर का अनुग्रह भी शाश्वत एवं अक्षय है। और जो धर्मात्मा ईश्वर की शरण लेते हैं, उनकी निश्चित ही विजय होती है। यशस्वी भव!"

युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से कहा, "हे प्रभु! आप शान्ति के स्रोत हैं तथा सौभाग्य के निवास स्थल हैं। आपको हमारा बारम्बार प्रणाम। हम सदैव हृदय से आपका स्मरण करते रहेंगे!"

समस्त प्राणियों का अस्तित्व, अनन्त ईश्वर में ही है। वास्तव में, भगवान श्रीकृष्ण के चावल के केवल एक दाने से सन्तुष्ट हो जाने के कारण दस हज़ार व्यक्तियों की भूख मिट गई और अप्रत्याशित तरीक़े से पाण्डवों की रक्षा हुई।

***

महाभारत, *संस्कृत में लिखित एक महाकाव्य है जिसकी रचना महर्षि वेद व्यास ने की थी।* रामायण *के साथ ही* महाभारत *भी भारतीय साहित्य की सर्वाधिक प्रसिद्ध कृतियों में से एक है। यह कहानियों व सिखावनियों से भरपूर है और इसमें* श्री भगवद्गीता *का आध्यात्मिक ख़जाना भी निहित है।*

***

मॉरगन हूपर द्वारा पुनर्कथित
हीरा टैनर द्वारा डिज़ाइन किया गया
© २०१८ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।